कैपरा हिर्कस

चर्चा में क्यों ?

- कैपरा हिर्कस बकरियों ने जैव प्रौद्योगिकी कंपनियों का ध्यान आकर्षित किया है जो बड़ी मात्रा में उपचारात्मक प्रोटीन का उत्पादन करना चाहती हैं।

कैपरा हिर्कस के बारे में –

- घरेलू बकरी या बसबैक (कैप्रा हिर्कस) बकरी-मृग की एक पालतू प्रजाति है जिसे आमतौर पर मवेशियों के रूप में रखा जाता है। इसे दक्षिण पश्चिम एशिया और पूर्वी यूरोप के जंगली बकरी के रूप में रखा जाता है ।
- बकरी पशु परिवार Bovidae और उपपरिवार Caprinae का एक सदस्य है। बकरियों की 300 से अधिक विशिष्ट नस्लें हैं। पुरातात्विक धारणाओं के अनुसार, यह पशुओं की सबसे पुरानी पालतू प्रजातियों में से एक है।
- इंग्लैंड में, जमुनापारी बकरी को एंग्लो-न्युबियन प्रजाति पैदा करने के लिए स्थानीय नस्लों के साथ पाला गया था।

भारतीय स्थिति

- घरेलू बकरी (कैपरा हिर्कस) की भारत के ग्रामीण परिदृश्य और कई विकासशील देशों में एक सामान्य उपस्थिति पायी जाती है। लगभग 10,000 साल पहले पालतू बनाए जाने के समय से ही बकरी ने मानव समुदायों में एक महत्वपूर्ण आर्थिक भूमिका निभाई है।
- खाद्य और कृषि संगठन (FAO) के अनुसार, दुनिया में लगभग 1,000 नस्लों की 830 मिलियन बकरियाँ हैं। राजस्थान में बकरियों की संख्या सबसे अधिक है, यहाँ पायी जाने वाली मारवाड़ी बकरी रेगिस्तान की कठोर जलवायु के अनुकूल होती है।

- महाराष्ट्र, तेलंगाना और उत्तरी कर्नाटक के शुष्क क्षेत्रों में पायी जाने वाली एक और नस्ल उस्मानाबादी है।
- उत्तरी केरल की मालाबारी (जिसे टेलिचेरी भी कहा जाता है) कम वसा वाले मांस के साथ एक उत्तम नस्ल है और इन गुणों को पंजाब की बीटल बकरी के साथ साझा करती है।
- पूर्वी भारतीय ब्लैक बंगाल बकरी बांग्लादेश के ग्रामीण गरीबों की आजीविका में महत्वपूर्ण योगदान देती है। यह त्वचा के 20 मिलियन वर्ग फुट से अधिक का योगदान देती है और अग्निशामकों के दस्ताने से लेकर फैशनेबल हैंडबैग तक चमड़े के सामानों की मांगों की आपूर्ति में सहायक है।
- भारतीय हाइलैंड्स में जंगली बकरियों की बहुत कम आबादी है, जिनसे घरेलू बकरियां या भेड़ें विकसित हुई हैं। इनमें मार्खोर, हिमालयी और नीलगिरी ताहर शामिल हैं।
- उत्तर प्रदेश की जमुनापारी बकरियों को सर्वाधिक पसंद किया गया क्योंकि वे आठ महीने के स्तनपान के दौरान 300 किलोग्राम दूध देती हैं।

औषधियों का निर्माण करना

- पहली सफलता एट्रीन के साथ मिली, जो बकरी से उत्पादित **एंटीथ्रॉम्बिन III अणु** का व्यापारिक नाम है।
- **एंटीथ्रॉम्बिन** रक्त को थक्कों से मुक्त रखता है और इसकी कमी से पल्मोनरी एम्बोलिज्म जैसी गंभीर बीमारियाँ हो सकती हैं। इससे प्रभावित व्यक्तियों को सप्ताह में दो बार एंटीथ्रॉम्बिन इंजेक्शन की आवश्यकता होती है, आमतौर पर दान किए गए रक्त से शुद्ध किया जाता है।
- एंटीथ्रॉम्बिन जीन की बकरियों की स्तन ग्रंथियों में कोशिकाएं होती हैं जो इस प्रोटीन को दूध में छोड़ती हैं। यह दावा किया गया है कि एक बकरी मानव रक्त के 90,000 यूनिट से प्राप्त होने वाले रक्त के बराबर एंटीथ्रॉम्बिन का उत्पादन कर सकती है।
- हाल ही में, **मोनोक्लोनल एंटीबॉडी सिटक्सिमैब**, जिसे कुछ फेफड़ों के कैंसर हेतु एक कैंसर-विरोधी दवा के रूप में FDA द्वारा अनुमोदित किया गया है, का क्लोन बकरी प्रजाति में भी उत्पादन किया गया।

स्रोत- द हिन्दू

उच्च शिक्षा पर अखिल भारतीय सर्वेक्षण

चर्चा में क्यों ?

- केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय ने रविवार को उच्च शिक्षा पर अखिल भारतीय सर्वेक्षण 2020-2021 के आंकड़े जारी किए, जिसमें 2019-20 की तुलना में देश भर में छात्र नामांकन में 7.5% की वृद्धि देखी गई और कुल छात्र नामांकन 4.13 करोड़ तक पहुंच गया।

सर्वेक्षण बिंदु

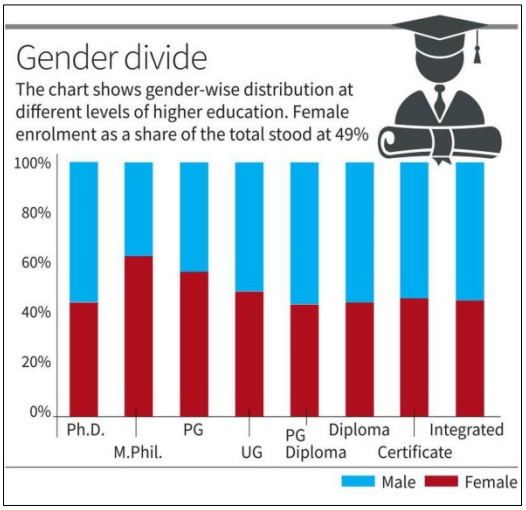

- उच्च शिक्षा कार्यक्रमों में महिला नामांकन पिछले वर्ष के 45% की तुलना में 2020-21 में कुल नामांकन का 49% तक पहुचं कर सुधार की स्थिति को दर्शा रहा है।
- अनुसूचित जाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, मुस्लिम नामांकन का अनुपात और इन समुदायों से संबंधित शिक्षकों का प्रतिनिधित्व पिछले वर्ष की तुलना में कम रहा, वहीं दूसरी ओर सबसे अच्छा शिक्षक-छात्र अनुपात **तमिलनाडु और कर्नाटक** जैसे राज्यों में पाया गया। परन्तु कॉलेज की संख्या में वृद्धि हुई है।
- दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों में नामांकन में 7% की वृद्धि हुई थी।
- महिलाओं के सभी नामांकन के लिए सकल नामांकन अनुपात (2011 की जनगणना के अनुसार) 2 अंक बढ़कर 27.3 हो गया।
- सभी स्नातक नामांकनों में, सबसे लोकप्रिय **बैचलर ऑफ आर्ट्स और बैचलर ऑफ साइंस** पाठ्यक्रम कार्यक्रम रहा, जहाँ **महिलाओं की संख्या भी पुरुषों से अधिक** थी।
- P.hd स्तर पर, सबसे लोकप्रिय पाठ्यक्रम इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में था। इनमें महिलाओं का नामांकन 50% से कम था।
- 21.4% सरकारी कॉलेजों में 2020-21 में कुल नामांकन का 34.5% हिस्सा था, जबकि बाकी 65.5% नामांकन निजी सहायता प्राप्त कॉलेजों और निजी गैर-सहायता प्राप्त कॉलेजों में देखा गया था।
- स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर कला पाठ्यक्रमों में उच्चतम स्नातक देखा गया।
- रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि उत्तर प्रदेश; महाराष्ट्र; तमिलनाडु; मध्य प्रदेश; कर्नाटक और राजस्थान नामांकित छात्रों की संख्या के मामले में शीर्ष 6 राज्य हैं और कॉलेजों की संख्या के मामले में उत्तर प्रदेश; महाराष्ट्र; कर्नाटक; राजस्थान ; तमिलनाडु; मध्य प्रदेश; आंध्र प्रदेश और गुजरात शीर्ष 8 राज्य हैं।

स्रोत- द हिन्दू

सोलिगा इकारिनाटा

चर्चा में क्यों ?

- हाल ही में ततैया की नई प्रजाति का नाम कर्नाटक के चामराजनगर जिले में बिलीगिरी रंगन हिल्स (बी.आर. हिल्स) के स्वदेशी समुदाय के सोलिगा के नाम पर रखा गया।

210, Virat Bhawan, 2nd Floor Near Post Office, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-09
Contact Us 9999516388, 8595638669

सोलिगा के बारे में

- सोलिगा, जिसे सोलेगा, शोलगा और शोलगा भी कहा जाता है, भारत का एक जातीय समूह है। इसके सदस्य ज्यादातर दक्षिणी कर्नाटक के चामराजनगर जिले और तमिलनाडु के इरोड जिले में पर्वत श्रृंखलाओं में रहते हैं।
- पारंपरिक रूप से सोलिगा समुदाय अपनी आजीविका के लिए गैर-लकड़ी वन उत्पादों (NTFP), छोटे शिकार और स्थानांतरित खेती की एक विस्तृत श्रृंखला एकत्र करने पर निर्भर है।

ततैया प्रजाति के बारे में

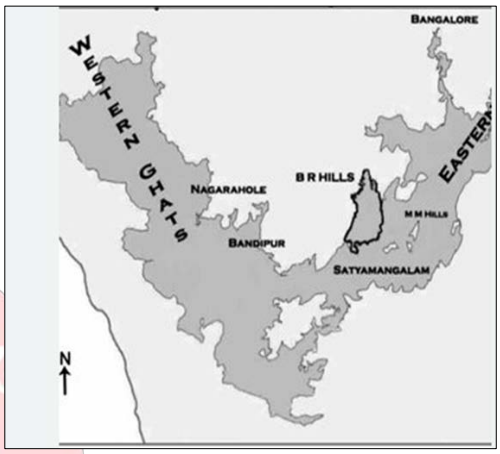

- पश्चिमी घाट में पायी जाने वाली इस प्रजाति के शरीर पर कुछ भाग में आम तौर पर पायी जाने वाली लकीरों की अनुपस्थिति है। इस कारण इस प्रजाति को 'इकारिनाटा' नाम दिया गया है और यह नया कीट आश्चर्यजनक रूप से रंगीन और अपने सभी सम्बन्धियों से अलग है।
- यह नया ततैया डार्विन ततैया परिवार इचन्यूमोनिडे के सबफ़ैमिली मेटोपिनाई से संबंधित है। इसकी **सबफ़ैमिली मेटोपियाना** की 27 प्रजातियों में दो जीवाश्म जेनेरा शामिल हैं, जिनमें से अधिकांश केवल पैलेआर्कटिक क्षेत्र, नियोट्रॉपिकल और नियरक्टिक क्षेत्रों में देखी जाती हैं।
- **मेटोपियाना** , दक्षिण भारत में पाई जाने वाली इस समुदाय की पहली प्रजाति है।

बी.आर.हिल्स

- पश्चिमी घाट और पूर्वी घाट के संगम के अंतर्गत आने वाली पहाड़ियाँ और अद्वितीय भौगोलिक स्थिति तथा निवास की विविधता BRT को भारत में जैव विविधता के लिए सबसे समृद्ध क्षेत्रों में से एक बनाती है। पौधों की कई सौ प्रजातियों के अलावा, चींटियों की प्रजातियाँ, तितलियों की प्रजातियाँ और गोबर भृंग की प्रजातियाँ यहाँ पाई जाती हैं।

स्रोत- द हिन्दू

OBC उप-वर्गीकरण पैनल

चर्चा में क्यों ?

- केंद्रीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार, अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC) के उप-वर्गीकरण के लिए न्यायमूर्ति जी. रोहिणी के नेतृत्व वाले आयोग(अक्टूबर, 2017 में गठित) को अब राष्ट्रपति द्वारा कार्यकाल में एक बार पुनः विस्तार कर दिया गया है।

रोहिणी आयोग

- इसका गठन अक्तूबर, 2017 में संविधान के अनुच्छेद-340 के तहत किया गया था। उस समय आयोग को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिये 12 सप्ताह का समय दिया गया था, हालाँकि इसके बाद से कई बार आयोग के कार्यकाल में विस्तार किया जा चुका है।
- भारतीय संविधान के **अनुच्छेद- 340** के अनुसार, भारत का राष्ट्रपति सामाजिक और शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़े वर्गों की दशाओं की जाँच करने तथा उनकी दशा में सुधार करने से संबंधित सिफारिश प्रदान के लिये एक आदेश के माध्यम से आयोग की नियुक्ति/गठन कर सकता है।

केंद्र सरकार की सेवाओं के तहत ग्रुप ए में 16.51%

केंद्र सरकार की सेवाओं के तहत ग्रुप बी में 13.38%

ग्रुप सी में 21.25% (सफाई कर्मचारियों को छोड़ दें)

ग्रुप सी 17.72% (सफाई कर्मचारी) शामिल है ।

प्रमुख बिंदु

- OBC छत्र के भीतर लगभग 3,000 जातियों को उप-वर्गीकृत करने का कार्य पूरा करने के लिए 12 सप्ताह का समय दिया गया था और उनके बीच 27% OBC कोटा के समान रूप से विभाजन की सिफारिश की गई थी।
- जनवरी को जारी अधिसूचना के तहत आयोग जुलाई, 2023 तक अपनी रिपोर्ट पेश करेगा।
- आयोग ने केंद्रीय सूची में सभी OBC समुदायों के बीच प्रमुख जाति समूहों की पहचान की थी और यह पाया गया कि OBC समुदायों का एक छोटा समूह 27% OBC कोटा से बड़ी संख्या में समुदायों को बाहर कर रहा था।
- आयोग ने सभी OBC समुदायों को 4 व्यापक श्रेणियों में विभाजित करने का फैसला किया, जिसमें कोटा का सबसे बड़ा हिस्सा उस समूह के पास जा रहा है जो ऐतिहासिक रूप से OBC कोटा से वंचित रहा है।
- हाल ही में बिहार सरकार, राज्य में अपने बहुप्रतीक्षित जाति-आधारित सर्वेक्षण के बीच में है और उत्तर प्रदेश सरकार अपने स्थानीय निकाय चुनावों में OBC आरक्षण की आवश्यकता का आकलन करने के लिए एक नया सर्वेक्षण कराने की प्रक्रिया में है। मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र जैसे अन्य राज्य भी स्थानीय निकाय चुनावों में ओबीसी आरक्षण को लागू करने के लिए पैनल बनाने पर विचार कर रहे हैं।
- 2011 की जनसंख्या के आधार पर सामाजिक-आर्थिक जाति जनगणना के हिस्से के रूप में जातियों की संख्या और उनकी आबादी की गणना करने के लिए एक देशव्यापी सर्वेक्षण किया गया था और इससे जुड़े आंकड़े कभी सार्वजनिक नहीं किए गए।

स्रोत- द हिन्दू

स्पाइडर स्टार सिस्टम

चर्चा में क्यों ?

- हाल ही में नासा के वैज्ञानिकों ने "स्पाइडर" स्टार सिस्टम से पहले गामा-किरण का पता लगाया है।

स्पाइडर स्टार सिस्टम के बारे में:

- यह एक बाइनरी स्टार सिस्टम है जिसमें एक सुपरडेंस स्टार (पल्सर) तेजी से घूमता है तथा दूसरे स्टार को खा जाता है।
- सुपर-सघन वस्तु, साथी को अपनी ओर खींचना शुरू करती है, यह जीनस लैट्रोडेक्टस की मकड़ियों की आदतों से मिलती-जुलती है, जिसमें मादा संभोग के बाद नर को खा जाती है, इसलिए यह नाम आया।
- प्रारंभ में, सघन पल्सर अपने साथी के बाहरी वातावरण से सामग्री को हटाता है तथा समय-समय पर हिंसक विस्फोटों में एकत्रित सामग्री को बहाता है।
- अपने जीवनकाल के बाद के चरण में, पल्सर से निकलने वाले ऊर्जावान कण अपने साथी के वातावरण को छीन सकते हैं।
- किसी भी मामले में, समय के साथ पल्सर धीरे-धीरे अपने साथी को मिटा देता है।

बाइनरी स्टार सिस्टम क्या है?

- यह एक द्विआधारी प्रणाली है जिसमें दो तारे द्रव्यमान के एक सामान्य केंद्र के चारों ओर परिक्रमा करते हैं, अर्थात वे गुरुत्वाकर्षण से एक- दूसरे से बंधे होते हैं।

पल्सर क्या होते हैं?

- पल्सर तेजी से घूमने वाले न्यूट्रॉन तारे हैं, जो बेहद सघन तारे हैं एवं लगभग पूरी तरह से न्यूट्रॉन से बने होते हैं। जिनका व्यास केवल 20 किमी. (12 मील) या उससे कम होता है।
- वे ब्रह्मांड भर में दूर तक विकिरण की केंद्रित धाराएँ उत्सर्जित करते हैं।

न्यूट्रॉन तारे क्या होते हैं?

- वे विशालकाय सितारों के अवशेष हैं जो एक सुपरनोवा के एक उग्र विस्फोट में नष्ट हो गए।

स्रोत-स्पेस टाइम / हिंदुस्तान टाइम्स

KARMANYEVADHIKARASTE MAA PHALESHU KADACHAN THE STUDY An Institute for IAS